कक्षा 12वीं के हिंदी अनिवार्य पाठ्यक्रम के लिए **'काव्य-गुण'** एवं **'काव्य-दोष'** के विस्तृत नोट्स यहाँ दिए गए हैं।:

---

1. काव्य-गुण (Poetic Merits)

परिभाषा: काव्य के सौंदर्य को बढ़ाने वाले और रस को उत्कर्ष प्रदान करने वाले तत्वों को 'काव्य-गुण' कहते हैं। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में शौर्य, वीरता और करुणा जैसे गुण होते हैं, उसी प्रकार काव्य में भी आंतरिक गुण होते हैं।

आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य-गुण मुख्य रूप से **तीन** प्रकार के होते हैं:

(i) माधुर्य गुण (Madhurya Guna)

- **परिभाषा:** जिस काव्य को पढ़ने या सुनने से हृदय में मधुरता का संचार हो और चित्त द्रवित हो जाए, उसे माधुर्य गुण कहते हैं।
- **विशेषता:** इसमें कोमल वर्णों (जैसे क, च, त, प) का प्रयोग होता है और ट-वर्ग (ट, ठ, ड, ढ) के कठोर वर्णों का अभाव होता है। यह मुख्य रूप से **शृंगार, करुणा और शांत रस** में पाया जाता है।
- **उदाहरण:** *"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय। सोह करै भहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय।"*

(ii) ओज गुण (Oja Guna)

- **परिभाषा:** जिस काव्य को पढ़ने या सुनने से हृदय में जोश, उत्साह और उमंग का संचार हो, वहाँ ओज गुण होता है।
- **विशेषता:** इसमें संयुक्त वर्णों (जैसे क्ष, त्र, ज्ञ) और ट-वर्ग के कठोर वर्णों का अधिक प्रयोग होता है। यह **वीर, रौद्र और बीभत्स रस** में पाया जाता है।
- **उदाहरण:** *"बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।"*

SOLANKI SIR

(iii) प्रसाद गुण (Prasada Guna)

- **परिभाषा:** जिस काव्य का अर्थ सुनते ही मन में वैसे ही व्याप्त हो जाए जैसे सूखे ईंधन में आग या साफ़ कपड़े में पानी, उसे प्रसाद गुण कहते हैं।
- **विशेषता:** इसकी भाषा अत्यंत सरल, सुबोध और स्पष्ट होती है। यह **सभी रसों** में पाया जा सकता है।
- **उदाहरण:** *"हे प्रभु आनंददाता ज्ञान हमको दीजिये, शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये।"*

---

2. काव्य-दोष (Poetic Defects)

परिभाषा: काव्य के अर्थ का बोध कराने में बाधा डालने वाले तत्वों को 'काव्य-दोष' कहते हैं। ये काव्य के आस्वाद या रस में रुकावट पैदा करते हैं।

आपके पाठ्यक्रम के मुख्य काव्य-दोष निम्नलिखित हैं:

- **श्रुतिकटुत्व दोष:** जब काव्य में कानों को चुभने वाले कठोर वर्णों (विशेषकर ट-वर्ग) का प्रयोग होता है।
    - *उदाहरण:* "देकर झिड़की खटकती थी, नृप को वह बात।"
- **च्युतसंस्कृति दोष:** जहाँ व्याकरण के नियमों का उल्लंघन किया गया हो।
    - *उदाहरण:* "मर्म वचन जब सीता बोला।" (यहाँ 'बोली' के स्थान पर 'बोला' व्याकरणिक रूप से गलत है)।
- **अक्रमत्व दोष:** जहाँ वाक्य में शब्दों का क्रम सही न हो।
    - *उदाहरण:* "अमानुश भूमि यह कर दूँ।" (सही क्रम: "यह भूमि अमानुश कर दूँ")।
- **पुनरुक्ति दोष:** जहाँ एक ही अर्थ वाले शब्द का अनावश्यक रूप से दोबारा प्रयोग हो।
    - *उदाहरण:* "ठंडी बर्फीली हवा चल रही है।" (बर्फ तो ठंडी ही होती है)।

SOLANKI SIR

- **ग्राम्यत्व दोष:** जहाँ काव्य में गँवारू या ग्रामीण भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाए जो साहित्यिक गरिमा के अनुकूल न हों।
    - *उदाहरण:* "मुंड पे मुकुट धरकर, कर में गदा लिए।" (यहाँ 'मस्तक' के स्थान पर 'मुंड' का प्रयोग ग्रामीण है)।

परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न:

1. माधुर्य और ओज गुण में कोई दो मुख्य अंतर लिखिए।
2. " व्याकरण की अशुद्धि" होने पर कौन सा काव्य-दोष होता है?
3. प्रसाद गुण की सोदाहरण परिभाषा लिखिए।

SOLANKI SIR